## अध्याय 6.

# पञ्च कल्याणक

**1. कल्याणक किसे कहते हैं ?**

तीर्थङ्करों के गर्भ, जन्म, तप (दीक्षा), ज्ञान एवं निर्वाण के समय इन्द्रों, देवों एवं मनुष्यों के द्वारा विशेष रूप से जो उत्सव मनाया जाता है, उसे कल्याणक कहते हैं।

**2. पाँच कल्याणक कौन-कौन से होते हैं ?**

गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, तपकल्याणक (दीक्षाकल्याणक), ज्ञानकल्याणक एवं मोक्षकल्याणक ।

**3. गर्भकल्याणक किसे कहते हैं ?**

सौधर्म इन्द्र अपने दिव्य अवधिज्ञान से तीर्थङ्कर के गर्भावतरण को निकट जानकर कुबेर को तीर्थङ्कर के माता-पिता के लिए नगरी का निर्माण करने एवं घर के आँगन में प्रतिदिन तीन बार साढ़े तीन करोड़ की संख्या का परिमाण लिए हुए धन की धारा (रत्नों की वर्षा)[1] करने की आज्ञा प्रदान करता है। इस प्रकार रत्नों की वर्षा गर्भ में आने से 6 माह पूर्व से जन्म होने तक अर्थात् लगभग 15 माह तक निरंतर होती है। तीर्थङ्कर की माता गर्भ धारण के पूर्व रात्रि के अंतिम पहर में अत्यन्त सुहावने, मनभावन और आह्लादकारी क्रमशः 16 स्वप्नों को देखती है, ये स्वप्न तीर्थङ्कर के गर्भावतरण के सूचक होते हैं। जैसे ही तीर्थङ्कर का गर्भावतरण होता है, स्वर्ग से सौधर्म इन्द्र सहित अनेक देव उस नगर की तीन परिक्रमा कर माता-पिता को नमस्कार करते हैं। गर्भ स्थित तीर्थङ्कर की स्तुति कर महान् उत्सव मनाते हैं। गर्भकल्याणक का उत्सव पूर्ण कर सौधर्म इन्द्र श्री आदि देवकुमारियों को जिन माता के गर्भ शोधन के लिए नियुक्त करता है। ये देवकुमारियाँ जिनमाता की सेवा करती हैं एवं माता का मन धर्म चर्चा में लगाए रखती हैं और सौधर्म इन्द्र देवों सहित अपने स्थान को वापस चला जाता है।

**4. जन्मकल्याणक किसे कहते हैं ?**

गर्भावधि पूर्ण होते ही जिनमाता तीर्थङ्कर बालक को जन्म देती है। जन्म होते ही तीनों लोक में आनन्द और सुख का प्रसार होता है। यहाँ तक कि जहाँ चौबीसों घंटे मार काट चल रही है, वहाँ नरकों में भी नारकी जीवों को एक क्षण के लिए अपूर्व सुख की प्राप्ति होती है एवं स्वर्ग के इन्द्रों के आसन कम्पायमान हो जाते हैं तथा कल्पवासी, ज्योतिषी, व्यंतर और भवनवासी देवों के यहाँ क्रमशः घंटा, सिंहनाद, भेरी और शंख अपने आप ही बजने लगते हैं। इन सब कारणों से इन्द्रों एवं देवों को तीर्थङ्कर के जन्म का निश्चय हो जाता है और तत्काल ही वे अपने आसन से नीचे उतर कर सात कदम आगे चलकर परोक्षरूप से तीर्थङ्कर (बालक) को नमस्कार कर उनकी स्तुति करते हैं। तदनन्तर सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से सात प्रकार की देव सेना जय-जय करती हुई जन्म नगरी की ओर गमन करती है। सौधर्म इन्द्र भी अपनी इन्द्राणी के साथ ऐरावत हाथी पर सवार होकर जन्म नगरी को गमन करते हैं। सौधर्म इन्द्र के साथ सारे देवगण जन्म नगरी की तीन प्रदक्षिणा देते हैं। तदनन्तर शची प्रसूति गृह में प्रच्छन्न रूप से

1. हरिवंश पुराण, 37/2-3/471

पहुँचकर जिन माता की तीन प्रदक्षिणा देकर, जिनमाता को मायामयी निद्रा से निद्रित कर, अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ जिन बालक की छवि को निहारती हुई बालक को लाकर सौधर्म इन्द्र को सौंप देती है एवं वहाँ एक मायामयी बालक को सुला देती है। सौधर्म इन्द्र तीर्थङ्कर बालक का दर्शन कर भाव विभोर हो जाता है एवं 1000 नेत्र बनाकर तीर्थङ्कर बालक का रूप देखता है। तत्पश्चात् ऐरावत हाथी पर आरूढ़ होकर जिन बालक को अपनी गोद में बिठाकर सुमेरु पर्वत पर जाकर पाण्डुकशिला पर क्षीरसागर के जल से तीर्थङ्कर बालक का 1008 कलशों से अभिषेक करता है, शची बालक को वस्त्राभूषणों से सुशोभित करती है। पश्चात् इन्द्र बालक के दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिह्न देखता है वही चिह्न उन तीर्थङ्कर का घोषित कर तीर्थङ्कर का नामकरण करता है। तत्पश्चात् सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर बालक को विराजमान कर वापस जन्म नगरी को आता है। इन्द्राणी, माता के पास जाकर मायामयी बालक को उठा लेती है और माता की मायामयी निद्रा को दूर कर जिन बालक को माता के पास रखती है। जिनमाता अत्यन्त प्रसन्न होकर बालक का दर्शन करती है। इन्द्र एवं देवगण तीर्थङ्कर के माता-पिता का विशेष सत्कार कर वापस अपने इन्द्रलोक आ जाते हैं ।

**5. तपकल्याणक किसे कहते हैं ?**

जन्मकल्याणक के बाद तीर्थङ्करों का बाल्यकाल व्यतीत होता है एवं युवा होने पर राज्यपद को स्वीकार करते हैं। (वर्तमान चौबीसी में 5 तीर्थङ्करों ने राज्यपद स्वीकार नहीं किया)। किसी निमित्त से उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है तब उसी समय ब्रह्मस्वर्ग से लौकान्तिक देव आकर तीर्थङ्कर के वैराग्य की प्रशंसा करते हुए स्तुति करते हैं। तत्पश्चात् सौधर्म इन्द्र क्षीरसागर के जल से वैरागी तीर्थङ्कर का अभिषेक करता है, जिसे दीक्षाभिषेक कहते हैं। तत्पश्चात् कुबेर द्वारा लायी गई पालकी में तीर्थङ्कर स्वयं बैठ जाते हैं, उस पालकी को मनुष्य एवं विद्याधर 7-7 कदम तक ले जाते हैं, इसके बाद देवतागण उस पालकी को आकाश मार्ग से दीक्षावन तक ले जाते हैं। वहाँ देवों द्वारा रखी हुई चन्द्रकान्तमणि की शिला पर विराजमान हो पद्मासन मुद्रा में पूर्वाभिमुख होकर सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार करके पञ्चमुष्ठी केशलोंच करके वस्त्राभूषण का त्यागकर जिनमुद्रा को धारण करते हुए समस्त पापों को त्याग कर महाव्रतों का संकल्प करते हैं। सौधर्म इन्द्र केशों (बालों)को रत्न के पिटारे में रखकर क्षीरसागर में विसर्जित करता है। दीक्षोपरांत तीर्थङ्कर की विशेष पूजा-भक्ति कर देवगण अपने-अपने स्थान को चले जाते हैं। (जैनतत्त्वविद्या, पृ. 35-36)

**6. ज्ञानकल्याणक किसे कहते हैं ?**

तीर्थङ्कर दीक्षा लेने के बाद मौन होकर घोर तपस्या करते हुए धर्म्यध्यान को बढ़ाते हुए क्षपक श्रेणी चढ़ते हुए, 10 वें गुणस्थान के अंत में मोहनीयकर्म का पूर्ण क्षय करते हुए 12 वें गुणस्थान के अन्तिम समय में ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अंतराय कर्म का क्षय होते ही केवलज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। जिससे जगत् के समस्त चराचर द्रव्यों को और उनकी अनंत पर्यायों को युगपत् जानने लगते हैं। केवलज्ञान उत्पन्न होते ही देव अपने-अपने यहाँ प्रकट होने वाले चिह्नों से एवं सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पायमान होने से अवधिज्ञान से जान लेते हैं कि तीर्थङ्कर को केवलज्ञान प्राप्त हो गया है, अत: इन्द्र एवं देव अपने स्थान से उठकर सात कदम आगे बढ़कर तीर्थङ्कर को नमस्कार करते हैं। सौधर्म इन्द्र सभी देवों के साथ तीर्थङ्कर के

दर्शन पूजन करने आते हैं एवं सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवसरण की रचना करता है। जिसमें तीर्थङ्कर विराजमान होते हैं, इन्द्र, देव, मनुष्य तथा तिर्यञ्च तीर्थङ्कर के दर्शन-पूजन करते एवं धर्मोपदेश सुनते हैं।

**7. तीर्थङ्करों की देशना दिन में कितने बार होती है एवं कितने समय तक होती है ?**

तीर्थङ्कर की देशना दिन में चार बार होती हैं -प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल एवं मध्यरात्रि में तथा चक्रवर्ती आदि विशेष पुरुष के आने से अकाल में भी देशना हो जाती है। एक बार में 3 मुहूर्त अर्थात् 2 घंटा 24 मिनट तक देशना होती है, जिसे दिव्यध्वनि कहते हैं।

(गोम्मटसार जीवकाण्ड जीव प्रबोधिनी, 365/595)

**8. मोक्षकल्याणक किसे कहते हैं ?**

तीर्थङ्करों का जब मोक्ष का समय निकट आ जाता है, तब वे समवसरण को छोड़कर जहाँ से निर्वाण (मोक्ष) होना है, वहाँ जाकर योग निरोध कर 14 वें गुणस्थान में आते ही पाँच ह्रस्व अक्षर (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के उच्चारण में जितना समय लगता है उसके अन्त में ही चार अघातिया कर्मों का क्षय कर निर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं। उसी समय इन्द्र एवं देव तीर्थङ्कर की निर्वाण भूमि में आते हैं और तीर्थङ्कर के परम पवित्र शरीर को रत्नमयी पालकी में विराजमान कर नमस्कार करते हैं। तदनन्तर अग्निकुमार देव अपने मुकुट से उत्पन्न अग्नि के द्वारा तीर्थङ्कर के शरीर का अंतिम संस्कार करते हैं। पश्चात् उस भस्म को मस्तक पर लगाकर उन जैसा बनने की भावना भाते हैं। फिर समस्त इन्द्र मिलकर आनंद नाटक करते हैं। इस प्रकार सभी देव विधिपूर्वक तीर्थङ्कर के निर्वाणकल्याणक की पूजन कर एवं उस स्थान पर वज्रसूची से चरण चिह्न बनाकर अपने-अपने स्थान वापस चले जाते हैं। (जैनतत्त्वविद्या, पृ. 38-39)

## अभ्यास

**सही या गलत बताइए -**

1. तीर्थङ्करों के जन्म के समय मात्र नारकियों को एक क्षण अपूर्व सुख होता है।
2. तीर्थङ्करों के जन्म के समय सौधर्म इन्द्र का आसन गिर जाता है।
3. तीर्थङ्करों को समवसरण में बैठे-बैठे मोक्ष नहीं होता है।
4. तीर्थङ्कर दीक्षा के लिए जाते हैं तो पालकी में स्वयं नहीं बैठते हैं।
5. कुबेर की आज्ञा से सौधर्म इन्द्र समवसरण की रचना करता है।

**अन्यत्र खोजिए -**

1. जब सौधर्म इन्द्र बालक तीर्थङ्कर को ऐरावत हाथी पर ले जाता है उस समय ऐशान इन्द्र क्या करता है ?
2. निर्वाण के बाद तीर्थङ्कर के नख-केश शेष रह जाते हैं, ऐसा कौन से आचार्य ने किस ग्रन्थ में लिखा है ?
3. निर्वाण के समय तीर्थङ्कर का पूर्ण शरीर विलीन हो जाता है ऐसा कौन से ग्रन्थ में किसने कहा है ?
4. सबसे ज्यादा रत्नों की वर्षा किस तीर्थङ्कर के समय हुई ?
5. पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में नंदा-सुनंदा क्यों नहीं बनाते हैं?